कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरादाबाद – प्रथम

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ0 विश्वविद्यालय,मेरठ (उ0प्र0) – 250110

टिड्डी दल से सम्बन्धित जानकारी

डा0 राम करण सिंह

रेगिस्तानी टिड्डी (*शिस्टोसरका ग्रेगेरिया*) : टिड्डी की एक प्रजाति है जो बहुत ही हानिकारक कीट है। यह छोटे सींग वाला तथा अत्यधिक गतिमान होता है। यह बहुत अधिक भोजन खाने के आदी होते है तथा प्राकृतिक और उगाई हुई हरी वनस्पति को बहुत अधिक क्षति पहुँचाते है । एक टिड्डा अपने वजन के बराबर या अधिक खा सकता है। इसका एक वर्ग किमी0 का झुण्ड लगभग 35000 आदमियों के बराबर भोजन खा सकता है। अनूकुल परिस्थितयों में इसके एक दल में लगभग 8 करोड तक टिड्यिॉं हो सकती है। एक टिड्डा दल प्रति दिन 150 किमी0 उडान भर सकता है । टिड्डियों का दल दिन के समय उडान भरता है तथा शाम होने पर पेडों पर या झाडियों पर या फसलों आदि में बसेरा करता है। अतः दलों की तलाश हेतु खासकर इन स्थानों की जॉच की जानी चाहिये । सुबह सूरज उगने पर ये उडना शुरू कर देते है। यह दल प्रायः ग्रीष्म मानसून के समय भोजन एवं प्रजनन के लिये पाकिस्तान होते हुए भारत के राजस्थान राज्य के जैसलमेर, बाडमेर जिलों में होते हुए देश में प्रवेश करते है। वर्ष 2020 से पूर्व भी भारत में टिड्डी दल का आगमन बहुत से वर्षो में होता रहा है ।

जीवन चक्र – टिड्डी के जीवन चक्र में तीन अवस्थाये होती है –

1. अण्डा 2. शिशु टिड्डी 3. वयस्क टिड्डी

- अण्डा – मादा टिडडियां जहॉं रात्रि विश्राम करती है वही नम मिटट्टी में अपने अण्डा रोपक अंग को लगभग 10–15 सेमी0 गहराई में घुसाकर अण्डे देती है। एक मादा 2–3 अण्ड गुच्छ देती है तथा एक गुच्छ में लगभग 60–80 अण्डे होते है । यह अण्डे पीले नांरगी रंग के होते हैं तथा 7–8 मिमी0 लम्बे होते हैं। इन अण्डों से लगभग 14 –20 दिनों में शिशु निकल आते है जिन्हे हॉपर्स भी कहा जाता है ।
- शिशु टिड्डी – अण्डों से निकलने के बाद पंखहीन शिशु जो कि सफेद रंग के होते है जमीन पर फुदक कर आगे बढते है तथा कोमल पत्तियों को खाते है। इसके बाद शीघ्र ये काले–भूरे रंग में परिवर्तित होने लगते है। वयस्क होने के पहले शिशु टिड्डी की पॉच अवस्थायें होती है। टिड्डी को वयस्क होने में लगभग 30 दिन का समय लगता है।
- वयस्क टिड्डी – वयस्क टिड्डी पीले रंग की होती है। मादा टिड्डी आकार में बडी होती है तथा इस पर काले रंग के धब्बे होते है। अंतिम दो सप्ताह में आपस में प्रजनन करते है तथा मैथुन के दो दिन के अन्दर अण्डे देने की प्रकिया आरम्भ हो जाती है। वयस्क मादा टिड्डी का जीवन चक्र लगभग 10–12 सप्ताह का होता है ।

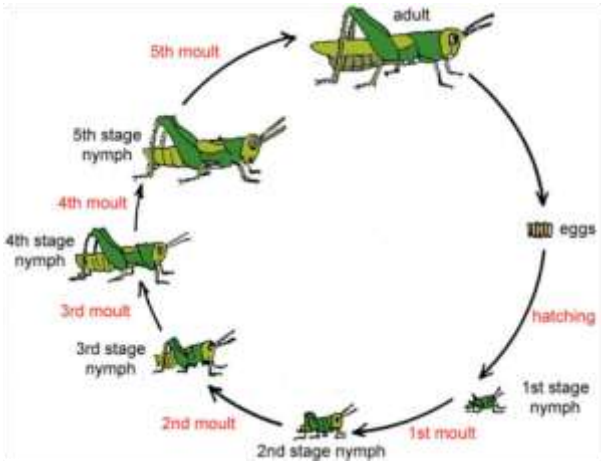

चित्र: **Life cycle of Locust: *Schistocerca gregaria***

टिड्डी दल का नियंत्रण –

1. दिन–रात अपने खेतों की निगरानी करते रहें ।
2. यदि टिड्डी दल दिखाई दे तो किसान भाई टीन के डिब्बे, थाली, ढोल आदि बजाकर आवाज करें तथा शोर मचाये इसमें टिड्डी दल आस–पास के खेतों पर आक्रमण नही कर पायेगा।
3. रासायनिक नियंत्रण हेतु फसलों पर निम्नलिखित कीटनाशियों में से किसी एक ही कीटनाशी का छिडकाव करें –

क्र.सं	कीटनाशक का नाम	मात्रा मिली./ग्राम	पानी की मात्रा
1	क्लोरोपायरीफॉस 20% ई.सी.	1200 मिली0	500 ली0
2	क्लोरीपायरीफॉस 50% ई.सी.	480 मिली0	
3	मेलाथियान 50% ई.सी.	1850 मिली0	
4	लेम्डासाईहेलोथ्रिन5% ई.सी.	400 मिली0	
5	डेल्टामोथ्रिन 2.8% ई.सी.	450 मिली0	
6	डाईफ्लूबेन्जुरोन 25 % डब्लू.पी.	120 ग्राम	

4. यदि टिड्डी दल शाम को कही बैठता है तो डायरेक्टरेट ऑफ प्लान्ट प्रोटेक्शन, क्वॉरेंटीन एण्ड स्टोरेज, फरीदाबाद की बेबसाइट www//ppqs.gov.in पर लॉगिन करे तथा क्षेत्रीय केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन केन्द्र, लखनऊ को फोन नं0 – 0522–2732063 पर सूचित करें ।
5. उक्त के अलावा राज्य स्तर पर बने कन्ट्रोल रूम के फोन नं0 0522–2205867 पर सूचित करें तथा प्रदेश स्तर पर श्री विजय कुमार, नोडल अधिकारी तथा श्री विनय सिंह, सह नोडल अधिकारी के मोबाइल नम्बरों क्रमशः 9450020578 व 9452487879 पर सम्पर्क करें ।